B.Ed 1st year (21-23)

Paper - C1 (Moral Development of Child)

* बालक का नैतिक विकास (कोहलबर्ग के संदर्भ में)
(Moral Development of Child)

Introduction :- व्यक्ति अपना संपूर्ण विकास समाज में ही करता है जहाँ उसे सही-गलत व्यवहारों का ज्ञान प्राप्त होता है जिसमें विद्यालयों, सामाजिक परिवेश एवं अन्य सामाजिक-शैक्षिक अभिकरणों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जिसके अंतर्गत बालक अपने संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करता है।

इसप्रकार बालक में नैतिक व्यवहारों या मूल्यों का समावेश बाल्यावस्था से लेकर किशोरावस्था तक होता रहता है, अतः बालकों में नैतिकता का समावेश सामाजिक अंतःक्रिया, आत्मबुद्धि और सामाजिक आदर्शों के अनुरूप विकसित होता है अर्थात उन्हीं के अनुरूप अपने व्यवहारों में कुशल नैतिक व्यवहारों का प्रयोग कर अपने भावि जीवन में एक सभ्य एवं आदर्श नागरिक बनकर समाज तथा राष्ट्र को उन्नति के पथ पर अग्रसर कर सकेगा।

* नैतिक विकास का अर्थ :- (Meaning of Moral Development) :-

सामान्य शब्दों में हम कह सकते हैं कि व्यक्ति का सामाजिक मूल्यों एवं आदर्शों के अनुरूप व्यवहार करना ही नैतिक विकास कहलाता है जैसे - सामाजिक रीति - रिवाजों, परम्पराओं और मान्यताओं के अनुरूप जीवन जीना।

अर्थात नैतिक विकास का अर्थ बच्चों या किशोरों या व्यक्तियों में उचित - अनुचित, सही - गलत व्यवहारों में अंतर करके उसके अनुरूप व्यवहार करने की योग्यता से है। अतः बालकों द्वारा अपने माता - पिता या पूर्वजों से अर्जित वे मूल्य,

मान्यताएँ, परम्पराएँ तथा रीति-रिवाज ही नैतिकता कहलाती है।

* **नैतिक विकास की परिभाषा :**

* **जोन्स के अनुसार :** "निश्चित समय या स्थान के आदर्शों के प्रति अनुरूपता का प्रदर्शन ही नैतिकता है।"

* **हरलॉक के अनुसार :** "सामाजिक समूहों की नैतिक संहिता के प्रति अनुरूपता ही नैतिकता है।"

* **बैरान के अनुसार :** "नैतिक विकास से तात्पर्य बढ़ती उम्र के साथ विभिन्न क्रियाओं के सही या गलत होने के बारे में सोचने की क्षमता में परिवर्तन से होता है।"

* **नैतिक विकास की विशेषताएँ :**

(1) इससे बालकों में उचित-अनुचित तथा सही-गलत व्यवहारों का ज्ञान प्राप्त होता है।

(2) इससे बालकों में समाज के मूल्यों एवं परम्पराओं को स्थापित करने में सहायता प्रदान होती है।

(3) इससे व्यक्ति समाज द्वारा सीखे गये नियमों के अनुरूप अपने व्यवहारों में परिवर्तन लाते हैं।

(4) यह बालक में उन क्षमताओं तथा योग्यताओं को विकसित करता है और उसे ~~आदर्श~~ नागरिक बनाता है।

(5) इससे बालकों में सामाजिक, धार्मिक, भौतिक तथा सैद्धांतिक मूल्यों का विकास होता है।